

रस धातु

Dr. Pankaj Jain
Associate Professor
Sharirkriya department
State model institute of Ayurved Sciences,
SMIAS, Gandhinagar, Gujarat

निरुक्तिः

तत्र रस गतौ धातुः अहरहः गच्छति इति अतो रसः

अर्थः

‘रस’ संचरणशील, गतिशील द्रव स्वरूप धातू है, सप्त धातुओ में प्रथम क्रमांक का धातु है।

Synonyms

- आहार प्रसाद
- धातु सार
- अग्निसंभव
- आहारतेज

स्थानः

तरुण्य रसस्य सर्वदेहानुसारित्वे पि हृदयं स्थानम्।
हृद्यशब्देन अत्र हृदयोपलक्षितः प्रदेशः उच्यते ।

न तु साक्षाद् हृदयम् ।

अर्थः

हृदयसमीप प्रदेश तथा हृदय से निकलनेवाली धमनियो
रस का महत्वपूर्ण स्थान है।

• तस्य च हृदयं स्थानम् । स हृदयात्
चतुर्विंशतिधमनीः अनप्रविश्य उर्ध्वगा
दर्श दश च अधोगामिन्यः
चतस्रस्तिर्यग्गाः ।

• -सु. सू. १४/३

- पोषक व पोष्य

Two types

सर्व इदम् पांचभौतिकम् अस्मिन् अर्थे ।

संघटनः

अर्थः

यद्यपि रस पांचभौतिक होता है तथापि उसमें जल महाभूत का आधिक्य होता है ।

स्वरूप :

स खलु द्रव- अनुसारी र्नेहन, जीवन.....॥

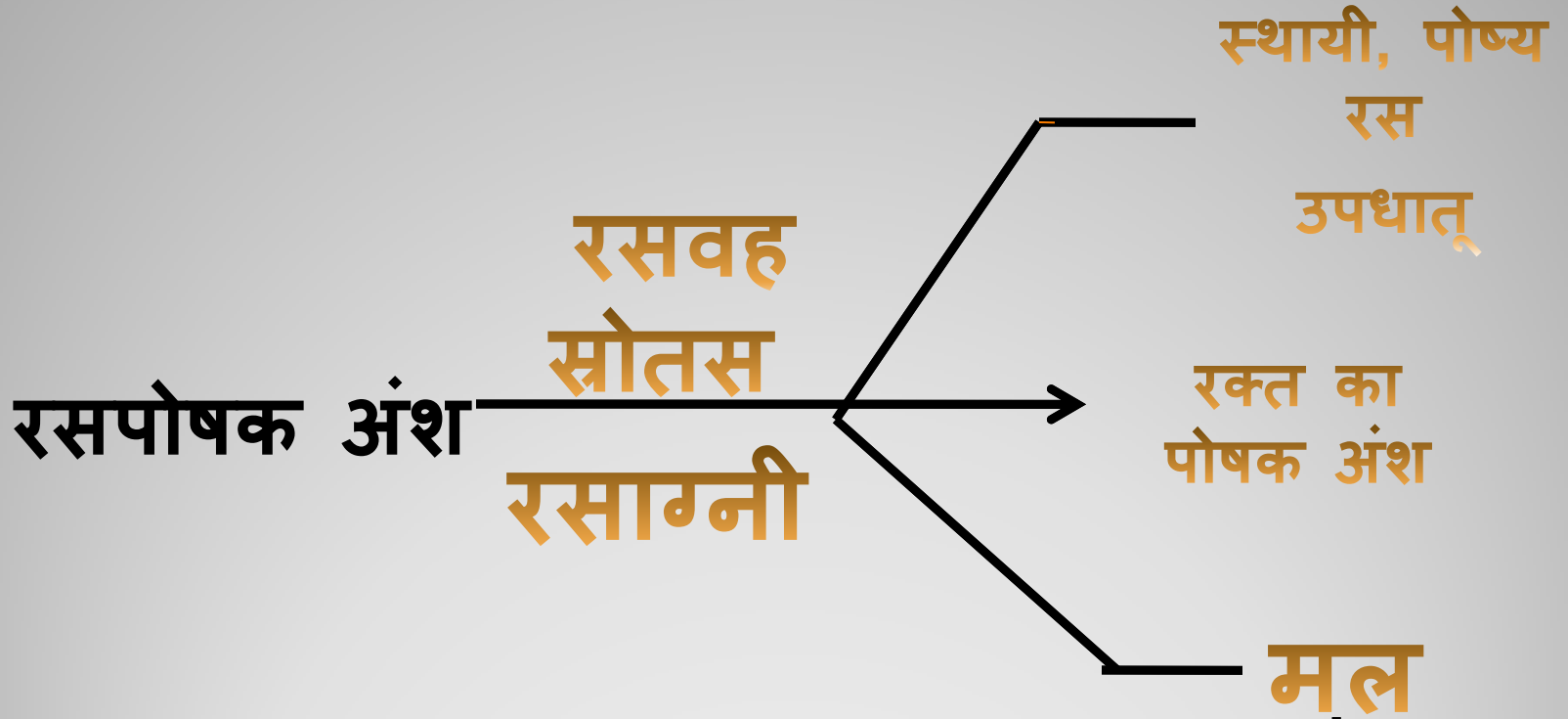
अर्थ:

रस द्रवानुसारी होने से, गति के करने से संपूर्ण शरीर मे अणु-परमाणुओ को ताजगी प्रदान करता है, उनका प्रीणन करता है ।

• तत्र पाञ्चभौतिकस्य चतुर्विधस्य षड्रसस्य।द्विविधवीर्यस्य अष्टविधवीर्यस्य वा अनेकगुणस्य उपयुक्तस्य आहारस्य सम्यक् परिणतस्य यः तेजोभूतः।सारः परमसूक्ष्मः सरसः इति उच्यते॥

•-सु. सू. १४/३

Formation Of rasa dhatu



परिणमन

परिणमन कालः

रसः किल एक अहेन एव संपद्यते ।

एकः अहः ।

अर्थ :

१२ घण्टो के पश्चात पोषक अंश तथा २४ घंटों के पश्चात स्थायी अथवा पोष्य धातु की निर्मिती होती है, यह अर्थ योग्य है ।

गुण (properties):

Drava, snigdha, sara, manda

- **द्रवता :**

यह महत्त्व गुण है | जल महाभूत प्रधान होने से यह गुण प्राप्त होता है |

‘द्रवानुसारी’ होने से गति का कार्य होता है, जिससे वह शरीर के अणु-रेणुओं तक पोषक अंश पहुँचाने का कार्य कर सकता है |

- **स्निग्धः** तैल, घृत इन द्रव्यों के समान ही स्निग्धता का अंश रस में होने से संपूर्ण शरीर को आद्रता,मार्दव प्राप्त होता है ।
- **शीतः** शरीर के कार्यव्यापार अतिउत्तेजित न होने देकर, स्थिरता प्रदान करने का कार्य करता है ।

- **गुरु** : सभी धातुओं के पोषक अंश का वहन तथा आपूर्ति कर, शरीर के वृद्धि तथा वर्धन में सहायक ऐसा रस का गुरु गुण है ।
- **श्लक्ष्णः** चिकना तथा चिपचिपा शरीर के अणु-परमाणुओं को जोड़ने का कार्य इस गुण के कारण ही होता है ।

- **वर्ण – श्वेत:**

दर्शन परीक्षा एवं अनुमान प्रमाण से रस का श्वेतवर्ण स्पष्ट होता है ।

- कृत्स्न शरीरं अहरहस्तर्पयति वर्धयति धारयति।
- यापयति च अद्रुश्टहेतुकेन कर्मणा॥
- तर्पयति इति बालम् मध्यस्थविरान् सर्वान् एव प्रीणयति।
- 1) तर्पण- वर्धयति इति बालम्।
- 2) वर्धन- वर्धन व पोषण.
- 3) प्रीणनम्

रस धातु के कार्य (functions of rasa dhatu)

- तर्पण
- द्रव + शीत
- गेहूँ, उडद, खजूर
- भारवर्धन का विचार नहीं
- इसका तत्काल कार्य होता है

ब्रुंहण
द्रव+शीत+स्निग्ध+गुरु
सिद्ध जल
भारवर्धन अपेक्षित
विशिष्ट कालानंतर परिणाम

तर्पण व ब्रुंहण के मध्य अंतर

- रसः अपि श्लेष्मवत्। (वाग्भट्ट सूत्रस्थान ११/८)
- अर्थः रस धातु के गुण और कर्म कफ के समान ही होते हैं।
- रस और कफ के बीच 'आश्रय-आश्रयी' संबंध होता है।
- कफ 'आश्रयी' (आश्रित) है और वह 'रस धातु' के आश्रय में शरीर में रहता है।
- रस धातु और कफ की वृद्धि के लक्षण समान होते हैं।

रस धातु और कफ दोष का संबंध

- चरक मतानुसार- स्तन्य, रज
- शाङ्गधर मतानुसार- स्तन्य

उपधातु Updhatu of rasa dhatu

- कफः पित्तं मलाः खेषु प्रस्वेदो नखरोम च।
- स्नेहो अक्षि त्वग्विशामोजो धातूनां क्रमशो मलाः।

•-अ.ह.सू

- Mala Kapha is the Mala of Rasa Dhatu

Mala of Rasa dhatu

Sr. No.	Dhatu	qualities (Guna)	functions(Karma)
1	<u>Rasa dhatu</u>	Drava, snigdha, sara, manda	satiety (Tushti), nourishment(Preenan), nourishing blood (Raktapushti)
2	<u>Rakta dhatu</u>	Drava, sara, visra, laghu	vitality (Jeevana), complexion(Varnaprasadana), nourishing muscles (Mamsapushti)
3	<u>Mamsa dhatu</u>	Sthira, guru, snigdha, pichila	nourishing body (Dehapushti), body mass (Lepa), nourishing adipose tissue(medapushti)
4	<u>Meda dhatu</u>	Snigdha, guru,shlakshna, mrudu, Sandra	oleation (Snehana) of eyes and body,firmness(drudhatwa), nourishing bones (asthipushti)
5	<u>Asthi dhatu</u>	Sthira,guru, kathina, khara	holding body frame(Dharana), nourishing bone marrow (Majjapushti)
6	<u>Majja dhatu</u>	Sandra, drava, snigdha,shlakshna	oleation (Snehana), strength(Balakara), filling up bones(Asthipoorana), nourishing reproductive tissues (Shukrapushti)
7	<u>Shukra dhatu</u>	Drava, sheeta, snigdha	pleasure (Harsha), strength (Bala), reproduction(Garbhotpadana)

आहाररस

- 1 आहाररस के कार्य अधिक व्यापक होते हैं ।
- 2 सर्व शरीर में कार्यरत
- 3 'अस्थायी'
- 4 तर्पण, वर्धन, धारण, यापान, ऐसे अनेक कार्य करता है
- 5 सभी धतुओं के पोषक अंश का वहन करता है ।

रस

- 1 रस के कार्य मर्यादित होते हैं।
- 2 'रस' धातू संबंधित स्रोतस, अवयव में कार्यरत
- 3 'स्थायी'
- 4 मुख्यातः प्रीणन, तर्पण, करता है
- 5 मुख्यतः रक्त के पोषक अंश का वहन करता है

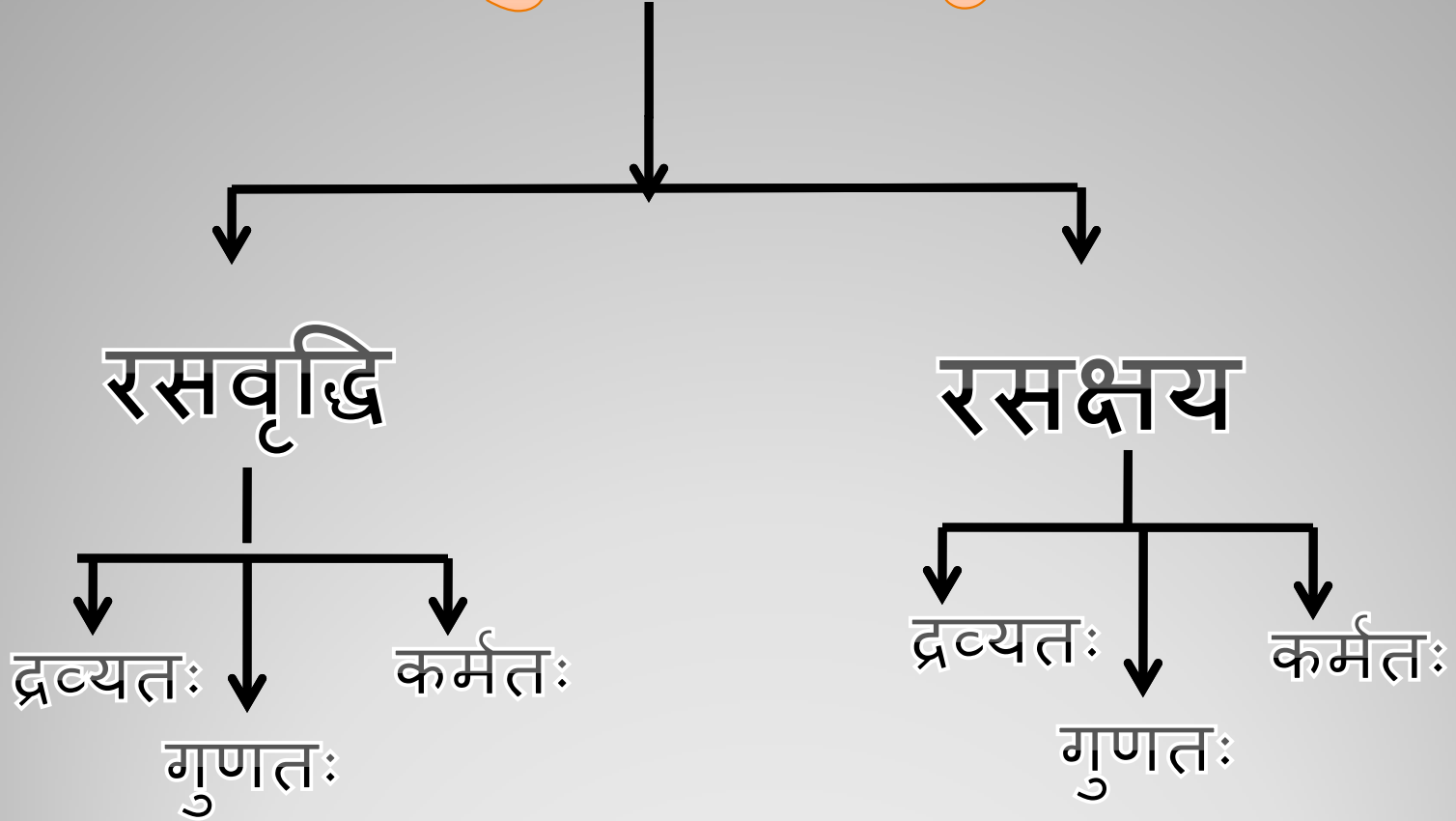
आहाररस तथा रस के कार्य का तुलनात्मक विचार

तत्र रिन्ग्ध-श्लक्षण-मृदु-प्रसन्न-सूक्ष्म-अल्प-
रससारता
गंभीर-सुकुमारलोमा-सप्रभेव च त्वक्
साराणाम् ।

स सारता सुखः शौभग्य-ऐश्वर्य-उपभोग-बुद्धि-
विघा-आरोग्य प्रहर्षणानि आयुष्यत्वं च
आचष्टे॥

- सार का अर्थ है-उस धातु में उपस्थित उत्तम, सर्वगुणसंपन्न भाग।
- धातु उत्तम सारता का होने पर बल भी उत्तम रहकर व्याधिक्रमत्व सम्यक रहता है।
- विभागशः परिक्षण के लिए-सार परीक्षण उपयोगी है।
- डलहण के अनुसार त्वक्सार का ही अर्थ 'रससार' है।
- शरीर की आरोग्युक्त त्वचा, कान्तिमान, प्रभायुक्त शरीर इनसे रससारता सूचित होती है।
- रस सार बलवान होने पर ज्ञानेन्द्रिय नित्य-नियम करता है।

धातु की विकृति



रस-वृद्धि

रसो अपि श्लेषमवत् ॥

रसवृद्धि के लक्षण कफवृद्धि के समान ही होते हैं, कारण-
रस-कफ के समान गुण एवं स्वरूप तथा रस-कफ का आश्रयाश्रयी
संबंध ।

रसो अतिवृद्धो हृदय उत्क्लेदं प्रसेकं च आपदयती॥

हृदय प्रदेश में उत्क्लेद तथा प्रसेक {अधिक मात्रा में मुँह में
पानी/लार छुटना} ये अपचन सदृश लक्षण होते हैं।

- रस वृद्धि में अग्निमांघ,अजीर्ण नाशक, आमनिर्मिती कम करनेवाले उपचार करने चाहिये।
- जैसे-लंघन, लघु आहार तथा कटू स्वाद युक्त द्रव्यो का उपयोग किया जा सकता है।
- वर्धित द्रवता कम करने के लिये 'पुनर्नवा' और गोक्षुर जैसी वनस्पति का उपयोग भी लाभदायक हो सकता है।

रस वृद्धि चिकित्सा

रस-क्षयः

रसे रौक्ष्यं श्रमः शोषो ग्लानि शब्दः असहिष्णुता।

रसक्षये हुत् पीडा कंप शून्यता तृष्णा च ॥

रसक्षय के लक्षण मे स्निग्ध, द्रव गुणो क हास दर्शाते हैं | ये आद्य धातुक्षय के लक्षण होते है,

- **रौक्ष्य-** रुक्षता-त्वचा का स्थितिस्थापकत्व कम हो जाते है |
- **श्रमः-** थकान-रुग्ण को थकान महसूस होती है, रसक्षय के कारण धातुओं का सम्यक तर्पण नहीं हो सकता |

- **शोष-**मुख सुख जाता है,मुख्यतः तीव्र ज्वर,अतिसार में अल्पायु रुग्ण होठों पर से जीभ घुमाकर शरीर में जल की मात्रा कम होना सूचित करता है।
- **ग्लानि-** अतिनिद्रता,ग्लानि तथा मन-इन्द्रियों का प्रीणन कम होने के कारण उनकी कार्यक्षमता का क्षय होता है।
- **शब्द असहिष्णुता-**इन्द्रियों की कार्यक्षमता का हास होने के कारण शब्द सहन नहीं होता।

- **हृत्पीड़ा-** रस्वः स्रोतस का मूलस्थान 'हृदय' होता है, अतः रसक्षय होने पर हृत्प्रदेश में धातुक्षयजन्य वातप्रकोप के कारण पीड़ा निर्माण होती है।
- **कंप** – धातुक्षयजन्य वातप्रकोप के कारण कंप उत्पन्न होता है।
- **शून्यता-** हृदय के साथ ही समस्त शरीर में शून्यता, दौर्बल्य की अनुभूति होती है।

- रस क्षय में रस् धातुक्षय की आपूर्ति करने वाली अर्थात् स्निग्ध, शीत गुण की चिकित्सा करनी पड़ती है
- जैसे-लाजा मंद, खर्जूर मंथ उबालकर शीत किया जल+निम्बू+नमक+शेकर,इक्षुरस,फलो के रस ।
- रस क्षय की आत्याधिक अवस्था में क्वचित I/V DNS का उपयोग भी शास्त्रीय सिद्धांत के अनुसार ही होगा ।

रस-क्षय चिकित्सा

रस धातु की महत्वता

मनुष्य रसमय होता है।

धारणात् धातवः ।

शरीर को धारण करता है, वह धातु है। शरीर बनाए रखने के लिए, निरामय दीर्घायुष्य की प्राप्ति के लिए शरीर के सातों धातु आरोग्यसंपन्न अवस्था में होने चाहिए।

रसात् रक्तम् ततो मांसं, मासांद् मेदः ततो अस्थि च।
अस्थौ मज्जा ततः शुक्रम्, शुक्रात् गर्भः प्रसादजः॥

उत्तम धातुपरंपरा के लिए आघ प्रवर्तक रसधातु
प्राकृत, साम्यावस्था में होना चाहिए।
रस धातु का कार्यक्षेत्र संपूर्ण देह है। अतः रसविकृति के
परिणाम सर्व शरीर में दिखाई देता है।

लसिका

नाभी आमशयो र्वेदो लसिका रुधिरं रसः।

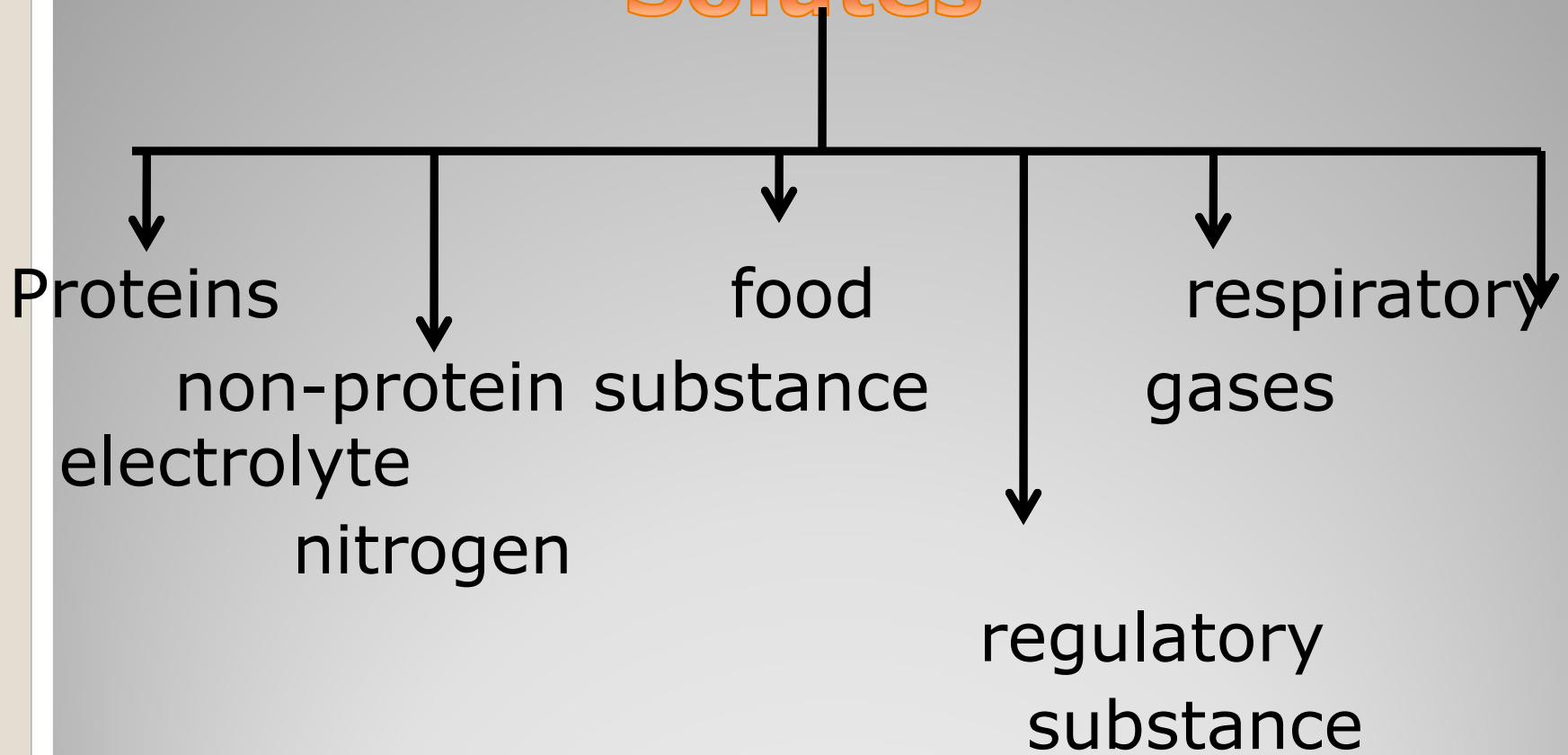
शरीर पर व्रण उत्पन्न होने पर त्वचा के द्वारा रक्त के बजाए केवल द्रव स्वरूप स्राव होता है, वही लसिका है।

यह पित्तदोष का स्थान है।

Modern part:

- **Plasma** : when the formed elements are removed from blood, a straw coloured liquid is left, which is called as plasma.
- **chemical composition**
 - a. Water:** (1) liquid portion of blood constitutes about 91.5% of plasma.
 - (2) 90% water derived from absorption from G.I. Tract, 10% from cellular respiration.

Solutes



Lymphatic system

body fluid form 70% of the body substance.
Lymph is present in lymphatic vessel while
fluid present in tissue spaces

LYMPHATIC SYSTEM CONSIST:

- a. Lymphatic vessels
- b. Serous membrane
- c. Lymphatic tissue

Composition of lymph

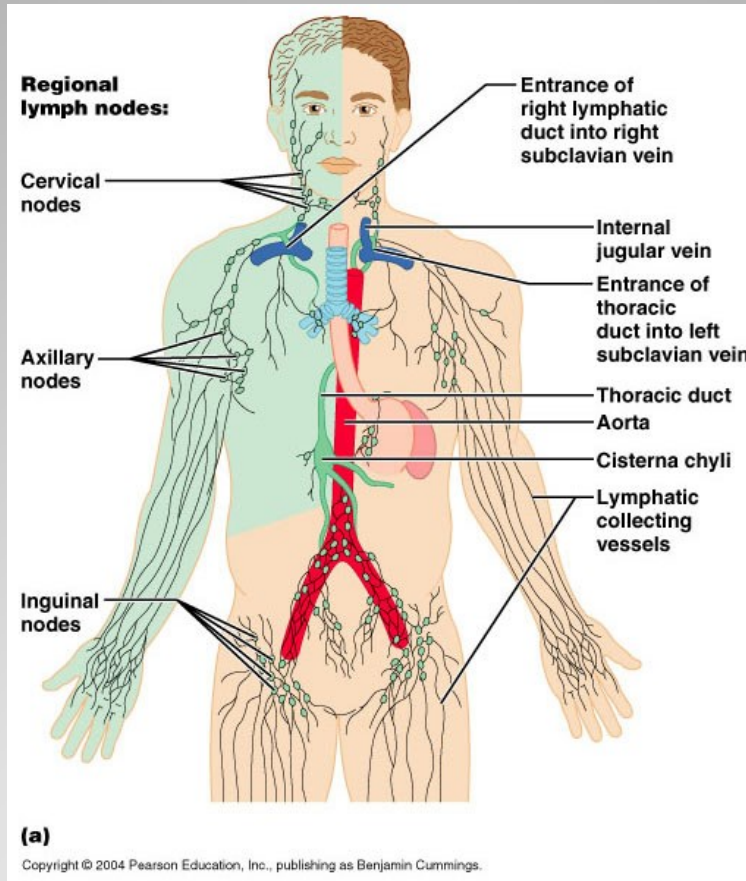
- Water-94%
- solid contents-6%

collection of lymph: it collect lymph from two main duct i.e. Thoracic & Rt.

Lymphatic duct which receive lymph from left and right side of the body respectively.

- At right side pressure is 4-8 mm of H₂O at end of thoracic duct pressure is 0-6mm of H₂O.
- **RATE OF LYMPH FLOW = 1 TO 1.5 ML/MIN.**

Lymphatic system



Function of lymphatic system

1. It acts as drainage of metabolites formed in body.
2. It maintains the body fluids & blood volume.
3. Collects waste materials from tissue.
4. Help in defence mechanism against foreign bodies and bacteria.
5. Helpful in fat absorption & its carriage.
6. It is site of formation of lymphocytes.
7. It forms gamma globulins, which are concerned with immunological reaction.

References

- Agnivesha. (2021). Charaka Samhita (R.K. Sharma & B. Dash, Trans.; Vol. 2, Sharira Sthana). Chowkhamba Sanskrit Series Office.
- Sushruta. (2019). Sushruta Samhita (P.V. Sharma, Trans.; Vol. 2, Sharira Sthana). Chaukhambha Visvabharati.
- Vagbhata. (2017). Ashtanga Hridaya (K.R. Srikantha Murthy, Trans.). Krishnadas Academy.
- Jain, P. K. (2024). *Ancient theory of human body channels*. Zenodo.
<https://doi.org/10.5281/zenodo.18149181>